गो-ग्राम वार्ता

फरवरी २०१९ प्रथमांक

GOSEVA

PARIVAR

गोसेवा परिवार की परिकल्पना

देश के विकास में गोवंश का योगदान

विकास एक क्रमिक व श्रमबद्ध प्रक्रिया है। विस्फोट या धमाके की भांति पलक झपकते ही विकास के परिणाम दृष्टिगोचर नहीं होते ; विकास तो श्रृंखला-अभिक्रिया का परिणाम होता है। ऐसे ही गो-आधारित ग्राम-विकास अभियानों की श्रृंखलाओं के माध्यम से गोसेवा परिवार एक सशक्त राष्ट्र के निर्माण में प्रयासरत है।

आज किसान की दयनीय अवस्था का एक प्रमुख कारण उसके पास गोवंश की उपयोगिता के ज्ञान का ना होना है। गोवर व गोमूत्र की बहुमुखी उपयोगिता से अनभिज्ञ किसान गोवंश को बेच देता है और यहीं से शुरू होती है गोवंश और किसान की व्यथा- कथा; किन्तु वही किसान यदि प्रशिक्षण प्राप्त करके गोवंश का पोषण करे और जैविक खेती करे , तो वह निश्चित ही सुसमृद्ध होगा ; और चूँकि भारत कृषि-प्रधान देश है, इसलिए किसान की समृद्धि में ही देश की समृद्धि है।

इसी उद्देश्य से **गोसेवा परिवार** द्वारा गो-पालन व जैविक खेती के प्रशिक्षण कई गाँवों में दिए जा रहे हैं। तस्करी के लिए सीमा पर पहुँचे गोवंश का उद्धार कर उसे वापस किसानों के घर पुन: स्थापित करने का कार्य **गोसेवा परिवार** कर रहा है। वास्तविक रूप में गो-रक्षा का यही एक प्रामाणिक एवं ठोस माध्यम है। विष मुक्त जैविक कृषि , कृषि भूमि संरक्षण , जल संरक्षण, कृषक परिवार की समृद्धि और पर्यावरण की रक्षा के लिए भारतीय गोवंश का संवर्धन नितांत आवश्यक है और **गोसेवा परिवार** इसी कार्य में अनवरत प्रयत्नशील है।

गो-ग्राम प्रशिक्षण

गत ४ वर्षों से गोसेवा परिवार गो- ग्राम विकास परियोजना के कार्यों में सतत् कार्यशील है। गोसेवा परिवार का मुख्य उद्देश्य गो-आधारित ग्राम विकास है । किसान अब तक सिर्फ दुग्ध प्राप्ति के लिए ही गो-पालन करता आया है और दूध न देने वाले गोवंश को बेच देता है जो अंततः कत्लखाने पहुँचते हैं ।

किसानों को गो-पालन एवं जैविक कृषि का प्रशिक्षण देकर उन्हें गोमूत्र व गोवर से होने वाले लाभ की जानकारी दी जाती है ; इसके परिणामस्वरूप उन्हें गोवंश के विक्रय की अपेक्षा गोवंश के पालन में अधिक लाभ दिखता है ।

गोवंश पालन प्रशिक्षण परियोजना के निम्नलिखित ५ आयाम हैं:

१) गो आधारित जैविक कृषि

२) गो आधारित ऊर्जा (गोबर गैस)

३) गो आधारित (पंचगव्य) चिकित्सा

४) गो एवं कृषि आधारित कुटीर-उद्योग

५) गो संवर्धन एवं नस्ल सुधार

प्रारंभिक स्तर पर ५ गांवों के कुछ चुनिंदा ग्रामीण परिवारों को ही प्रशिक्षण हेतु चुना गया । उनके घरों में गोबर गैस प्लांट लगवाए गए एवं उन्हें गो-आधारित- कृषि का प्रशिक्षण भी दिया गया । गोमूत्र तथा गोवर की विभिन्न उपयोगिताओं की जानकारी भी उन्हें दी गई (यथा- उनके औषधीय गुण, जैविक खेती में उपयोग, दैनिक प्रयोग आदि)। इस प्रशिक्षण की सफलता के परिणाम ६ महीनों में ही स्पष्ट दिखने लगे और तब इसे बड़े स्तर पर आयोजित करने का विचार बना । औपचारिक रूप से प्रथम प्रशिक्षण शिविर का आयोजन १ दिसम्बर २०१७ को किया गया । अब तक ऐसे १५ प्रशिक्षण शिविर आयोजित किए जा चुके हैं । इनमें बंगाल के १५० गाँवों के ४५० कार्यकर्ताओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया । इनमें से ७७ महिलाएं थीं । प्रशिक्षण प्राप्त कार्यकर्ताओं ने अपने-अपने गाँवों में जाकर, अन्य किसानों को भी प्रशिक्षित किया, जिससे इस आयाम की व्यापकता एवं गति बढ़ी । ३००० से अधिक ग्रामवासी गोमूत्र सेवन से लाभान्वित हुए।वर्तमान में ५०० से अधिक किसान,गो-आधारित -कृषि योजना में संलग्न हैं । उदारमना महानुभावों के सौहार्द्य व सहयोग से, कृषक परिवारों में ७० बायोगैस प्लांट लगवाए गए। अनुपयोगी समझकर जिस गोवंश को किसान बेच देता था, अब वही किसान बिना दुग्ध वाले गोवंश की मांग कर रहा है ; यही गोसेवा परिवार के अथक श्रम की सफलता का द्योतक है ।

गोसेवा परिवार ने पहुँचाया गोवंश सीमा से ग्राम तक जवान से किसान तक

बंगाल की सीमा पर गोवंश की तस्करी बहुत आम बात है । पर सवाल यह है कि बी.ऐस.ऐफ. के जवान इस गोवंश को पकड़ भी लें, तो आगे इनका करें क्या ? इन्हें रखे कहाँ ? बी.ऐस.ऐफ. ने बंग-सीमा पर पकड़े गए गोवंश के उद्धार के लिए गोसेवा - परिवार से गुहार लगाई। सभी नर-बछड़े थे । गोसेवा परिवार ने बी.ऐस.ऐफ. अधिकारियों से मिलकर उन गोवंश की रक्षा के लिए अपनी प्रतिबद्धता दर्शाते हुए दिसम्बर २०१८ में १९४ गोवंश को अपनाया ।आवश्यक औपचारिकता पूरी करके, उन गोवंश को बंग-सीमा से सोदपुर स्थित कामधेनु गोशाला में लाया गया । लाया गया सारा गोवंश अत्यंत दयनीय व ज़ख़्मी हालत में था - टूटी टांगें, घावों से भरी क्षत-विक्षत देह, कुपोषण व संक्रामक रोगों से ग्रस्त। पशु -चिकित्सा विशेषज्ञों की टीम बुलाई गयी । गोसेवा परिवार के कार्यकर्ताओं ने अपलक दिन-रात एक करके गोवंश की सुश्रुषा की । किसानों को दिया गया प्रशिक्षण कारगर सिद्ध हुआ जिसके फलस्वरूप वे बिना दुग्ध वाले गोवंश को भी पालने लगे हैं। वे और अधिक गोवंश की मांग कर रहे हैं । उनकी इन मांगों की आपूर्ति के मार्फत स्वस्थ किये गए लगभग ११५ गोवंश, प्रशिक्षित किसानों में संवितरित किए जा चुके हैं। इस अभियान की सफलता के पीछे कई गोभक्तों व संस्थाओं का आर्थिक व कार्मिक अनुदान सहयोगी बना । गोसेवा परिवार उनका आभारी है ।

गो-ग्राम विकास की टीम पहुँची आहारमुंडा
२९ व ३० दिसम्बर २०१८

गो-ग्राम विकास (गोसेवा परिवार) कार्यकर्ता, कल्याण आश्रम के कार्यकर्ता व आई.आई.टी. खड़गपुर के भूतपूर्व छात्र (IIT Kharagpur Alumni), २९ व ३० दिसम्बर २०१८ को IIT-Kharagpur से करीब ४० की.मी. दूर, पश्चिम मिदनापुर ज़िले के २ गाँवों में उनको प्रशिक्षण देने हेतु पहुँचे ।उनके द्वारा सम्बोधित जन-सभाओं में मुख्य रूप से ३ विषयों की पूर्व-प्रदत्त जानकारी की पुनरावृत्ति की गयी, यथा - १) शून्य-लागत जैविक खेती २) वर्षा-जल-संचयन व ३)गो-आधारित अर्थव्यवस्था। तदनंतर किसानों के खेतों में जाकर, उन्होंने जल- संचयन प्रायोग्य क्षेत्र को चिन्हित भी किया ।

गाँवों में बच्चों को एक रोचक चुनौती दी गयी। गाँव की सफाई के उद्देश्य से उन्हें गाँव में फेंका गया ५०किलो प्लास्टिक कत्रित करके लाना था । उस चुनौती में सफलता प्राप्त करने पर उन्हें उपहार - प्रतीक स्वरूप एक फुटबॉल दी गयी। इसके बाद जनवरी २०१९ में भी गोसेवा परिवार के कुछ कार्यकर्ता पर्यवेक्षण हेतु पुनः आहारमुण्डा गए और गाँव वालों को आवश्यक दिशा निर्देश दिया ।

कार्यकर्ताओं ने केशियारी स्कूल के प्रबंधन-विभाग से,निकट भविष्य में शुरू किए जाने वाले कौशल -विकास- कार्यक्रम और जैविक-कृषि प्रशिक्षण केंद्र सम्बन्धी चर्चा भी की ।

ग्राम-वासियों ने गहरी रुचि प्रदर्शित करते हुए इस अभियान में जुड़ने की इच्छा व्यक्त की ।

पाठक स्तंभ

ई- बुलेटिन 'गो-ग्राम वार्ता' का ये प्रथम अंक है। इसके विभिन्न विभाग हमारी छोटी सी टीम के समन्वित प्रयासों से तैयार किए गए हैं। अन्य अनुभवी सदस्यों का सहयोग भी हमें मिला। प्रयास यही रहा है कि पाठ्य- सामग्री के तथ्य व अंकों में यथासम्भव प्रामाणिकता हो। इस ई-बुलेटिन द्वारा हम **गोसेवा परिवार** की गतिविधियों को आप तक पहुँचाने का प्रयास करेंगे।इस ई-बुलेटिन को सुंदर, प्रभावी व सफल बनाने के लिए आपके सुझाव नितांत आवश्यक व अपेक्षित हैं।

आगामी अंकों में पाठकों की टिप्पणियों के लिए अलग से एक कॉलम होगा। इसके लिए आप २०० शब्दों के अंदर अपने विचार लिखकर हमें इस ई-मेल पर ५ मार्च २०१९ तक भेज दें :

feedback@gosevaparivar.org

चयनित लेखों को आवश्यक सम्पादन के बाद प्रकाशित किया जाएगा। परन्तु प्रत्येक अप्रकाशित लेख भी हमारे लिए उतना ही मान्य होगा जितना कि प्रकाशित लेख। ई-बुलेटिन की हमारी यह यात्रा आपके साथ व प्रेम से ही सफल हो पाएगी। अतः आपका सहयोग अत्यंत महत्त्वपूर्ण व निवेदित है।

धन्यवाद
टीम गो-ग्राम वार्ता

सम्पर्क सूत्र :

संचार- प्रौद्योगिकी (वेबसाइट)
gosevaparivar.org

दूरभाष -यंत्र संख्या (मोबाइल नंबर)
८१००३३००४४ (8100330044)

अनुडाक (ई-मेल)
feedback@gosevaparivar.org

हमारी परिकल्पना व अभियानों में सहभागी बनें
Join us in our Vision and Mission

गोसेवा परिवार की प्रवर्तमान गतिविधियाँ

१) किसानों के लिए प्रशिक्षण शिविर
२) गो-ग्राम यात्रा -- चयनित गाँवों में नगरवासियों की एक-दिवसीय यात्रा
३) मासिक सत्संग -- संकीर्तन माध्यम द्वारा प्रति माह गो-महिमा, गोसेवा व पंचगव्य पदार्थों के व्यवहार सम्बन्धी जागृति
४) पहली रोटी गाय की -- घर-घर से गो-ग्रास का संग्रह करके गोशाला पहुँचाना

आगामी कार्यक्रम

गो-ग्राम प्रशिक्षण शिविर
२२ - २७ फरवरी २०१९
बर्द्धमान

जल-महोत्सव
मार्च २०१९
(गो-ग्राम विकास योजना के अंतर्गत वर्षा-जल-संरक्षण व संचय परियोजना)

सम्पादकीय विभाग

गो-ग्राम वार्ता

सम्पादन-विभाग के सदस्य

- अर्चना अग्रवाल (अंग्रेज़ी विभाग प्रमुख)
- हरिकृष्ण सराफ (हिन्दी विभाग प्रमुख)
- सिमरन जैन
- प्रवीण अग्रवाल
- शीतल तुलस्यान

सलाहकार समिति

- अलका मोदी
- निर्मल अग्रवाल
- ललित अग्रवाल